भारतीय भाषा समिति

Bharatiya Bhasha Samiti

Workshop Report

1.	**Activity Type**	व्याख्यानमाला/परिचर्चा (Lecture/Discussion)
2.	**Title**	**जगद्गुरु श्री शंकराचार्य व्याख्यानमाला** **Jagadguru Shri Shankaracharya Vyakhyanmala**
3.	**Tentative Date**	21 March, 2024
4.	**Duration**	2 - 3घंटे / Hours
5.	**Main Organising institution**	Pandit Sundarlal Sharma (Open) University Chhattisagarh, Bilaspur
6.	**Venue**	Pandit Sundarlal Sharma (Open) University Chhattisagarh, Bilaspur
7.	**State/UT**	Chhattisagarh
8.	**Key language(s)**	हिंदी
9.	**Detail of Local Coordinator(s)** *(Name, designation, affiliation details, contact, email)* *(also attach CV at the end)*	Dr. Jaipal Singh Head, Department of Hindi, Pandit Sundarlal Sharma (Open) University Chhattisagarh, Bilaspur Email : singh.jaipal82@gmail.com
10.	National Coordinatorfor the program from Bharatiya Bhasha Samiti	Shri Sudhakar Upadhyay Consultant (Academic) Bharatiya Bhasha Samiti Contact: 9407509465 Email: bbs.sudhakarbharat@gmail.com

1. Introduction of the Programme

जगद्गुरु श्री शंकराचार्य भारतीय सनातन संस्कृति के संवाहक एवं पूज्य हैं, हम सबके सांझे धरोहर हैं। भारत की भौगोलिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक एकता एवं अखंडता पुष्ट करने हेतु उन्होंने अपना पूरा जीवन सर्वस्व न्योछावर कर दिया। उन्होंने भारत की पुण्यभूमि में सभी दिशाओं में यात्रा कर अपने संवाद कौशल से सनातन धर्म की पताका लहराई। सनातन धर्म के प्रसार के लिए चारों दिशाओं में मठ स्थापित किए।

भाषा सांस्कृतिक विरासत का द्वार है। संस्कृति और सभ्यताओं की सबसे गूढ़ एवं मूलभूत बातों तक पहुँचना है तो उसके साहित्य को खंगालना होगा एवं साहित्य रूपी समुद्र में डुबकी लगाने हेतु भाषा पर पकड़ निरंतर बना कर रखनी होगी। इसी कारण से भाषाएँ देश की एकता एवं अखंडता को भी पुष्ट और मजबूत करती है। भाषा, संस्कृति एवं राष्ट्रीय एकता यह तीनों एक दूसरे से जुड़े हुए है। किसी भी देश के विकास के लिए ये तीनों आवश्यक हैं, मानव सभ्यता को जानने समझने के लिए जरूरी हैं।

जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी के दर्शन पर एक देशव्यापी चर्चा खड़े करने तथा भारत की एकात्मता में जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी के योगदान को युवाओं के मध्य ले जाने हेतु इस व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इस व्याख्यानमाला के विषय थे–

1) जगद्गुरु श्री शंकराचार्य रू आध्यात्मिक एवं भाषाई एकता के वाहक
2) भारत की एकता और एकात्मता में जगद्गुरु श्री शंकराचार्य का योगदान
3) जगद्गुरु श्री शंकराचार्य के दर्शन में भारतीय एकात्मता और भाषाएँ
4) जगद्गुरु श्री शंकराचार्य एवं भारत की एकात्मता

कार्यशाला का उद्देश्य –

1. जगद्गुरु श्री शंकराचार्य के आध्यात्मिक दर्शन और उनके कार्यों को व्यापक विमर्श में लाना एवं लोगों के मध्य लेकर जाना।
2. जगद्गुरु श्री शंकराचार्य के दर्शन एवं उनके कार्यों में भारतीय भाषाओं की भूमिका को रेखांकित करना।
3. देश की एकात्मता में भारतीय भाषा के महत्त्व पर परिचर्चा करवाना।

INVITATION CARD

आमंत्राण पत्र

3. Brochure Brochure (if any) and Posters Posters / Banners Banners / Flyers of the Programme Programme

4. **Summary of the Programme**

जगद्गुरु श्री भांकराचार्य व्याख्यानमाला REPORT

दिनांक 21 मार्च, 2024 को 11 बजे एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला जगद्गुरु श्री शंकराचार्य व्याख्यानमाला का उद्घाटन हुआ। उद्घाटन सत्र में विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति डॉ. बंश गोपाल सिंह की अध्यक्षता में माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर इस कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। माननीय कुलपति जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि भारतीय संस्कृति विशाल है, जो मातृभाषा पर टिकी हुई हैं। उन्होंने कहा भारतीय संस्कृति भारत ही नहीं अपितु पूरे संसार को एक सूत्र में पिरोय रखने का कार्य करती है। 'वसुधैव कुटुंबकम्' की अवधारणा इसी बात को प्रमाणित करती है। भारतीय इतिहास में यात्री अगस्तमुनि के बाद अनेक महापुरुषों ने भारतीय संस्कृति को बढ़ाने के लिए प्रयास किया है। इसी कड़ी में जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी जोड़कर देखने की आज आवश्यकता है। उन्होंने हिंदी सहित भारतीय भाषाओं के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा आज हमें विकसित भारत बनाने के लिए भारत की सभी भाषाओं को महत्व देने की आवश्यकता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आज की यह एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला लोकहित में हमारी प्राचीन सांस्कृतिक वैभव और भाषा के महत्व को को और अधिक विस्तार करने और सुदृढ़ करने में मील का पत्थर साबित होगी।

मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थावे विद्यापीठ, बिहार में माननीय कुलपति तथा पूर्व अध्यक्ष छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग, रायपुर डॉ. विनय कुमार पाठक जी ने धार्मिक आध्यात्मिकता पर विस्तार से व्याख्यान देते हुए कहा की भारतीय जीवन में भारतीय धर्म और संस्कृति आखिर क्यों आवश्यक है? इसका उत्तर यह है कि भारतीय लोकाश्रय के हृदय में धर्म

और संस्कृति के जो भाव विद्यमान हैं उनसे हम कभी भी अलग नहीं हो पाए हैं। आज हमें जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी संस्कारवान बनने पर बल देते हैं। इसके लिए धर्म आधार है, धर्म संस्कृति का संवाहक है। उनके बताए मार्ग पर चलकर हम भारतीय संस्कृति के गौरव को पुनः स्थापित कर सकते हैं।

उद्घाटन सत्र में छात्र अध्ययन यात्रा के प्रभारी के रूप में पधारी डॉ. किरण झा, सहायक निदेशक केंद्रीय हिंदी निदेशाल, ने कहा भारतीय धर्म में जगद्गुरु श्री शंकराचार्य का महत्वपूर्ण योगदान है। जिसे आत्मसात करते हुए अपने जीवन में उतारने की आवश्यकता है। उन्होंने पूरे भारतवर्ष के चारों दिशाओं में धर्म और संस्कृति के प्रसार के लिए चार धाम स्थापित किये। उनके अनुसार धर्म का मतलब सामाजिक समरसता, बंधुत्व और शिक्षा भी है जो मानवता और धर्म दोनों को स्थापित करती है। उन्होंने कहा धर्म और संस्कृति को स्थापित करने के लिए यात्रा का विशेष महत्व है। विवेकानंद, महात्मागाँधी, दयानंद सरस्वती की यात्राएँ धर्म, अध्यात्म और संस्कृति को स्थापित करने के लिए की गईं यात्राएँ थीं।

स्वागत भाषण विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री भुवन राज सिंह ने दिया। उन्होंने कहा कि इस कार्यशाला के माध्यम से जगद्गुरु श्री शंकराचार्य के विभिन्न पक्षों से अवगत हो सकेंगे। उन्होंने विषय पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए माननीय अतिथियों का आत्मिय स्वागत तथा अभिनंदन किया।

इस कार्यशाला के स्थानीय संयोजक डॉ. जयपाल सिंह ने इस एक दिवसीय कार्यशाला 'जगद्गुरु श्री शंकराचार्य व्याख्यानमाला का संक्षिप्त परिचय देते हुए अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

5. Techical Session

तकनीकी सत्र में मुख्य अव्यागत और वक्ता स्वामी श्री चक्र महामेरु पीठाधिपति ने हमारे सनातन धर्म के पुनः स्थापना करने का श्रेय जगद्गुरु श्री शंकराचार्य को बताया। आगे उन्होंने कहा कि इस देश को यदि बचाना है तो इसके लिए धर्म बचेगा, तब संस्कृति और फिर देश बचेगा। आदि गुरु श्री शंकराचार्य ने सनातन धर्म को पूरे विश्व में फैलाया। इसके प्रचार–प्रसार एवं ध्वज को आगे बढ़ाने के लिए चार मठों की स्थापना की। इन मठों पर आज गुरु–शिष्य परंपरा संचालित हो रही है। जगद्गुरु श्री शंकराचार्य सिर्फ भारत की संस्कृति के ही ध्वजवाहक नहीं थे बल्कि उन्होंने बाहर से आई श्रेष्ट संस्कृति को भी स्वीकार किया है। उन्होंने कहा कि आजकल धर्म की अनेक परिभाषाएँ दी जाती हैं लेकिन सनातन धर्म ही मूल धर्म है। इसे हम सभी को अपनाना चाहिए इसी में हम सबका कल्याण होगा। उन्होंने व्याख्यान हेते आमंत्रित करने के लिए स्थानीय संयोजक डॉ. जयपाल सिंह को बहुत–बहुत धन्यवाद, आशीर्वाद कहा।

डॉ. राजेश चतुर्वेदी जी ने अपने व्याख्यान में कहा कि भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में जब हम आगे बढ़े तो उसमें हम अलग–अलग धर्म, जाति, मजहब या संस्कृति होते हुए भी एक धर्म और एक संस्कृति के थे और वह था राष्ट्रीय धर्म और हमारी राष्ट्रीय संस्कृति। आज हमे इस बात की आवश्यकता है कि हम अपने देश को कैसे आगे ले जाएँ।

इस एक दिवसीय कार्यशाला में प्रतिभाग कर रहे सभी प्रतिभागियों को भारतीय धर्म, संस्कृति और अध्यात्म को जानने–समझने का अवसर प्राप्त हुआ। इस कार्यशाला में प्रतिभागियों को किट, प्रमाण–पत्र, स्वल्पाहार दिया गया। अंत में डॉ. जयपाल सिंह ने अपने आभार में मंचासीन अतिथियों, भारतीय भाषा समिति (शिक्षा मंत्रालय) भारत सरकार अध्यक्ष श्री चमुकृष्ण शास्त्री जी, डॉ. चंदन श्रीवास्तव, श्री सुधाकर उपाध्याय तथा सभी प्रतिभागियों, विश्वविद्यालय परिवार को धन्वाद ज्ञापित किया।

6. Invited Resource Persons

- स्वामी श्री सच्चिदानंद तीर्थ जी महराज श्री चक्र महामेरु पीठक, मुंगेली
- श्री मोहन पाठक व्याकराणाचार्य, बिलासपुर
- डॉ. राजेश चतुर्वेदी, निदेशक कला संकाय, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

7. **Kit for participates**

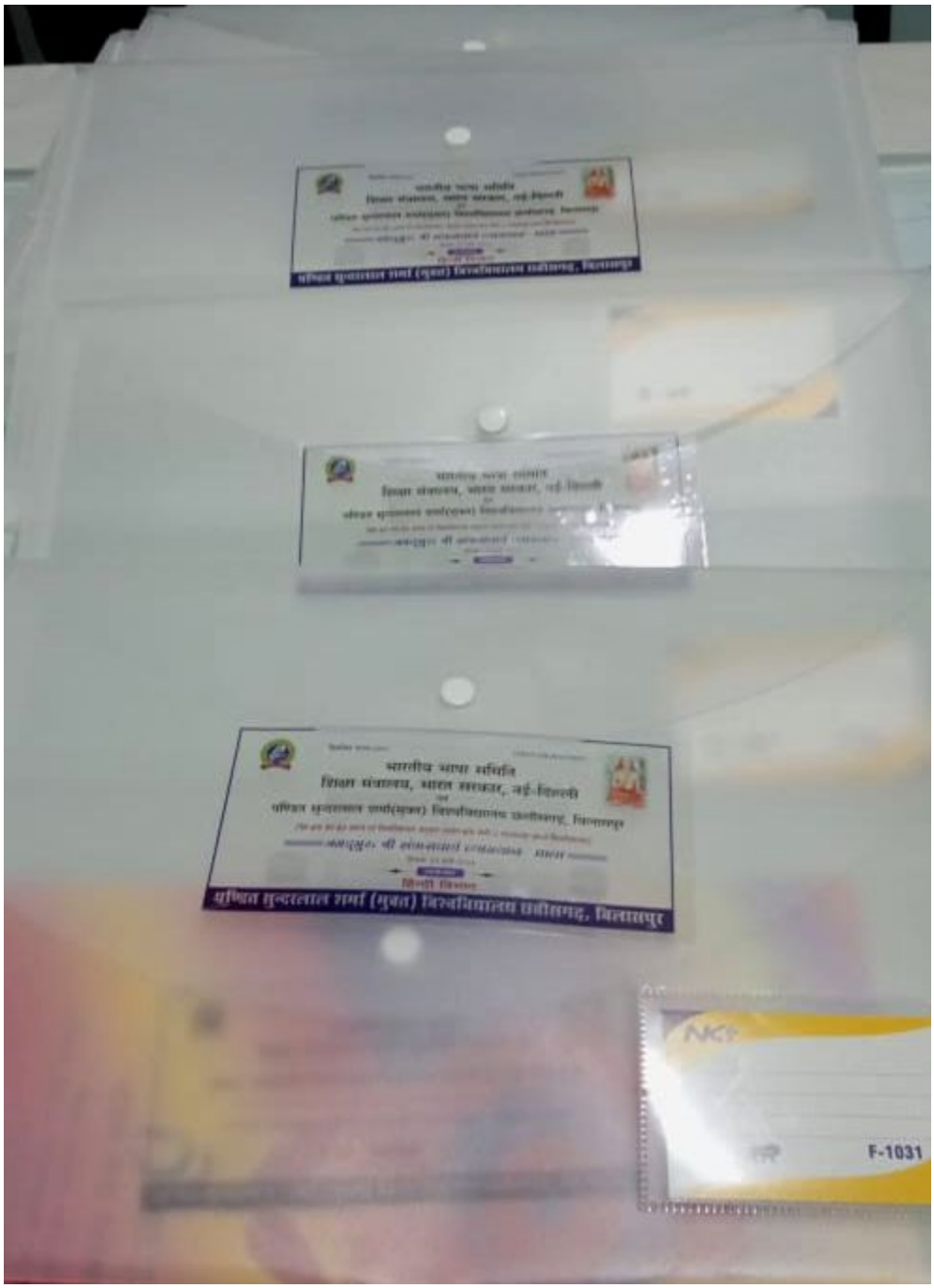

8. Paid for participates

9. Photos of the Programme

उद्घाटन सत्र के दौरान मंचासीन अतिथि, मान. कुलपति, कुलसचिव एवं स्थानीय संयोजक

दीप प्रज्जवलन मुख्य अतिथि डॉ. विनय कुमार पाठक, पूर्व अध्यक्ष छत्तीसगढ़ी राज भाषा आयोग, रायपुर

दीप प्रज्जवलन माननीय कुलपति जी, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़, बिलासपुर

माँ सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण कुलसचिव जी, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़, बिलासपुर

माँ सरस्वती प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्जवलन, स्थानीय संयोजक डॉ. जयपाल सिंह, विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग

मुख्य अतिथि का पुष्प पौध से स्वागत कुलसचिव जी द्वारा

अध्यक्ष एवं माननीय कुलपति जी का पुष्प पौध से स्वागत संयोजक द्वारा

विशिष्ट अतिथि डॉ. किरण झा, सहायक निदेशक केंद्रीय हिंदी निदेशालय का पुष्प पौध से स्वागत कुलसचिव जी द्वारा

कुलसचिव जी का पुष्प पौध से स्वागत स्थानीय संयोजक डॉ. जयपाल सिंह, विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग द्वारा

कार्यक्रम में माननीय कुलपति डॉ. बंश गोपाल सिंह जी का संबोधन

मुख्य अतिथि को शाल श्री फल एवं स्मृति चिह्न भेंट करते माननीय कुलपति जी

स्वामी श्री सच्चिदानंद तीर्थ जी महराज श्रीचक्र महामेरु पीठक, मुंगेली द्वारा जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी पर व्याख्यान

स्वामी श्री सच्चिदानंद तीर्थ जी महराज श्रीचक्र महामेरु पीठक, मुंगेली को अंग वस्त्र भेंट

स्वामी श्री सच्चिदानंद तीर्थ जी महराज श्रीचक्र महामेरु पीठक, मुंगेली को स्मृति चिह्न भेंट

कार्यक्रम में उपस्थित सम्माननीय प्राध्यापक, अधिकारी, विद्यार्थी, कर्मचारी

कार्यक्रम में उपस्थित सम्माननीय प्राध्यापक, अधिकारी, विद्यार्थी, कर्मचारी

कार्यक्रम में उपस्थित सम्माननीय प्राध्यापक, अधिकारी, विद्यार्थी, कर्मचारी

कार्यक्रम में केरल विश्वविद्यालय की छात्रा मीनाक्षी द्वारा परिचर्चा

कार्यक्रम में केरल विश्वविद्यालय की छात्र द्वारा परिचर्चा

कार्यक्रम का सामूहिक छायाचित्र

कार्यक्रम का सामूहिक छायाचित्र

कार्यक्रम का सामूहिक छायाचित्र

11. Sample of the Certificate issued to the participants/Resource Persons

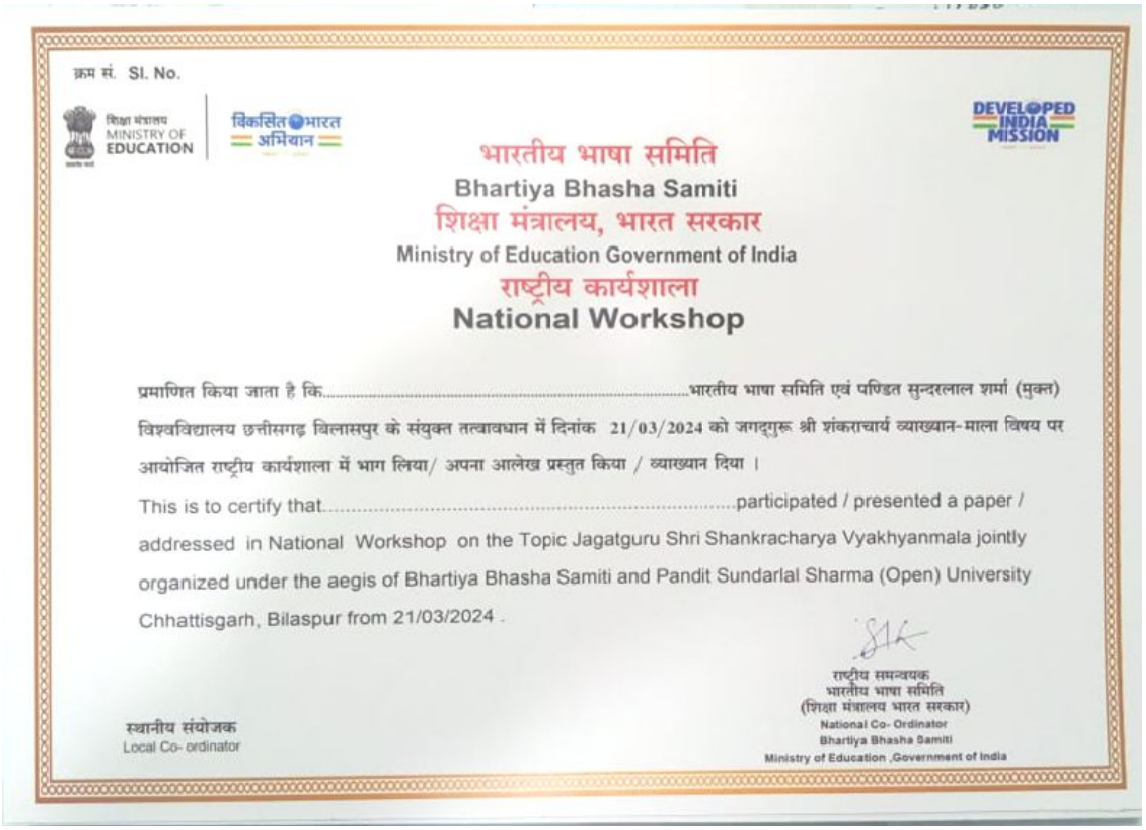

क्रम सं. Sl. No.

शिक्षा मंत्रालय MINISTRY OF EDUCATION | विकसित भारत अभियान

DEVELOPED INDIA MISSION

भारतीय भाषा समिति

Bhartiya Bhasha Samiti

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

Ministry of Education Government of India

राष्ट्रीय कार्यशाला

National Workshop

प्रमाणित किया जाता है कि.....भारतीय भाषा समिति एवं पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ बिलासपुर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 21/03/2024 को जगद्गुरू श्री शंकराचार्य व्याख्यान-माला विषय पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया/ अपना आलेख प्रस्तुत किया / व्याख्यान दिया ।

This is to certify that.....participated / presented a paper / addressed in National Workshop on the Topic Jagatguru Shri Shankracharya Vyakhyanmala jointly organized under the aegis of Bhartiya Bhasha Samiti and Pandit Sundarlal Sharma (Open) University Chhattisgarh, Bilaspur from 21/03/2024 .

राष्ट्रीय समन्वयक
भारतीय भाषा समिति
(शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार)
National Co- Ordinator
Bhartiya Bhasha Samiti
Ministry of Education ,Government of India

स्थानीय संयोजक
Local Co- ordinator

8.

12. Breakfast

13. Newspaper Clippings of the Media Coverage of the Program 22 March 2024

दैनिक भास्कर

धर्म और संस्कृति के संरक्षण से ही देश बचेगा

ओपन यूनिवर्सिटी में जगद्गुरू श्री शंकराचार्य पर व्याख्यान माला

एजुकेशन रिपोर्टर | बिलासपुर

पं. सुंदरलाल शर्मा ओपन यूनिवर्सिटी में जगद्गुरू श्री शंकराचार्य पर व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। इसके साथ ही छात्र अध्ययन यात्रा का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम केंद्रीय हिंदी निदेशालय एवं भारतीय भाषा समिति के संयुक्त तत्वावधान में हुआ। मुख्य अतिथि स्वामी श्री चक्र महामेरू पीठाधिपति ने जगद्गुरू श्री शंकराचार्य के द्वारा किए गए कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि संस्कृति बचेगी, तब देश बचेगा। धर्म से संस्कृति जुड़ी हुई है और धर्म, संस्कृति के साथ भारत की संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखना अति आवश्यक है। जो कि जगद्गुरू श्री शंकराचार्य का मुख्य उद्देश्य है। मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विनय कुमार पाठक, मुख्य वक्ता केंद्रीय हिंदी निदेशालय की डॉ. किरण झा रहीं। अध्यक्षता कुलपति प्रो. बंशगोपाल सिंह ने की। जगद्गुरू श्री शंकराचार्य पर व्याख्यान माला का भी आयोजन किया गया।

आरोपित भाषा से संस्कार नहीं मिलता : डॉ. झा

मुख्य वक्ता डॉ. झा ने कहा कि हिंदी सागर है, जो संपूर्ण भारत को समेटे हुए है। उन्होंने केंद्रीय हिंदी निदेशालय के योजनाओं की भी जानकारी दी। मुख्य अतिथि डॉ. पाठक ने कहा कि हिंदी लोकाश्रय के बल से आगे बढ़ रही है। आरोपित भाषा से संस्कार नहीं मिल पाता। स्वागत भाषण कुलसचिव भुवन राज सिंह ने दिया। डॉ. हीरालाल शर्मा ने कहा कि भारतीय परंपरा में अतिथि देवों भवः को चरितार्थ करते हुए हिन्दीत्तर प्रांत केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र से आए आगंतुक छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवं परम्परा से रूबरू हो सकेंगे। आभार प्रदर्शन हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति ने दिया।

नईदुनिया

शुक्रवार 22 मार्च 2024

पं. सुंदरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय के व्याख्यान में विद्वानों का मत, महाराष्ट्र, कर्नाटक व केरल के युवाओं ने रखी अपनी बात

युवाओं की पसंद बन रही अब हिंदी भाषा

साहित्यकारों का विशेष योगदान: कुलपति डा. सिंह

संस्कृति बचेगी तभी देश बचेगा: स्वामी चक्र महामेरु

गैर हिंदी भाषी राज्यों से पहुंचे छात्र-छात्राएं

अतिथि देवो भवः यहां आकर जाना

हिंदी की अपनी विशिष्ट पहचान

प्रचार-प्रसार में अब काफी तेजी

समाज में अब फर्क दिखने लगा

यात्रा में मैंने देखी सब जगह हिंदी

इंटरनेट मीडिया पर भी बनी पसंद

शंकराचार्य व्याख्यान माला व छात्र अध्ययन यात्रा के उद्घाटन पर अतिथियों ने कहा

हिन्दी समुद्र रूपी सागर, समेटी हुई है संपूर्ण भारत को

प. सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय बिलासपुर में गुरुवार को केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय एवं भारतीय भाषा समिति के संयुक्त तत्वावधान में जगदगुरू श्री शंकराचार्य व्याख्यान माला एवं छात्र अध्ययन यात्रा का उद्घाटन किया गया। अतिथियों ने कहा कि हिन्दी समुद्र रूपी सागर है, जो संपूर्ण भारत को समेटी हुई है।

संस्कृति जुड़ी हुई है धर्म से

जगदगुरु श्री शंकराचार्य व्याख्यान माला के मुख्य अतिथि स्वामी श्री एक महामेरु पीठाधिपति ने जगदगुरु श्री शंकराचार्य द्वारा किए गए कार्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि संस्कृति बचेगी तब देश बचेगा। धर्म से संस्कृति जुड़ी हुई है। धर्म, संस्कृति के साथ भारत की संस्कृति को अक्षुण बनाए रखना अति आवश्यक है। यही जगदगुरु श्री शंकराचार्य का मुख्य उद्देश्य है।

बिलासपुर। कार्यक्रम में स्वागत भाषण विश्वविद्यालय के कुलसचिव भुवन राज सिंह ने दिया। उन्होंने अतिथियों का अभिनंदन किया।

कार्यक्रम की प्रस्तावना रखते हुए डॉ. हीरालाल शर्मा ने कहा कि भारतीय परंपरा में अतिथि देवो भवः को चरितार्थ करते हुए हिन्दीतर प्रांत केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र से आए आगंतुक छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवं परंपरा से रूबरू हो सकेंगे। बीज वक्तव्य देते हुए केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय से आईं डॉ. किरण झा ने कहा कि हिन्दी समुद्र रूपी सागर है जो संपूर्ण भारत को समेटे हुए है। उन्होंने केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के योजनाओं की भी जानकारी दी। मुख्य अतिथि डॉ. विनय कुमार पाठक ने कहा कि हिन्दी लोकाश्रय के बल से आगे बढ़ रही है। सारी भाषाओं में प्रेम है। मंचस्थ अतिथियों का शॉल, श्रीफल, प्रतीक चिन्ह देकर सम्मान किया गया। कार्यक्रम में हिन्दीतर प्रदेश केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र से आए छात्र-छात्राओं के साथ भारी संख्या में अन्य लोगों की उपस्थिति रही। आभार प्रदर्शन हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति ने किया।

तेजी से हुआ है हिंदी भाषा का विकास

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहें कुलपति प्रो. डॉ. बंश गोपाल सिंह ने कहा कि हिंदीत्तर प्रांत की छात्र-छात्राएं छत्तीसगढ़ में हिन्दी को बढ़ाने जिन साहित्यकारों का योगदान है, उनसे रूबरू हो सकेंगे। उन्होंने कहा कि 1990 से लेकर आज तक हिन्दी भाषा का विकास अत्यंत तेज गति से हुआ है। इससे हिन्दी की स्वीकारता धीरे-धीरे बढ़ी है। उन्होंने भारतीय परिदृश्य में भाषा की राजनीतिकरण पर भी प्रकाश डाला तथा सभी भाषा को महत्व देने की आवश्यकता पर बल दिया।

परिवर्तनों को स्वीकारते हुए बेहतर समाज का करें निर्माण: प्रो. चक्रवाल

दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

करने होंगे सकारात्मक प्रयास

एवीएम के नन्हें सैनिकों ने किया पाककला का प्रदर्शन

इन्होंने कहा

रंगों की होली

हरिभूमि

हिंदी भाषा की स्वीकारिता बढ़ रही है: कुलपति

बिलासपुर @ पत्रिका. पंडित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय में 21 मार्च को केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय एवं भारतीय भाषा समिति के संयुक्त तत्वावधान में जगदगुरू श्री शंकराचार्य व्याख्यान माला एवं छात्र अध्ययन यात्रा का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो. डॉ. बंश गोपाल सिंह ने कहा कि हिन्दी की स्वीकारता धीरे-धीरे बढ़ी है। स्वागत भाषण विश्वविद्यालय के कुलसचिव भुवन राज सिंह ने दिया। डॉ. हीरालाल शर्मा ने प्रस्तावना व्यक्त किया। बीज वक्तव्य केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय से पधारी डॉ. किरण झा ने व्यक्त किए। मुख्य अतिथि डॉ. विनय कुमार पाठक थे।

पत्रिका

11. Conclusion of the Programme

जगद्गुरु श्री शंकराचार्य व्याख्यानमाला विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन भारतीय संस्कृति, ज्ञान और भारतीय भाषाओं के विकास के लिए उपलब्धि है। इस कार्यशाला में देश भर के प्रतिभागियों ने गूगल फार्म से पंजीयन कराया। स्थल पंजीयन की की व्यवस्था थी। इस कार्यशाला में केरल, महाराष्ट्र के अध्ययन यात्रा में शामिल विद्याथियों ने भी प्रतिभाग किया। इस कार्यशाला में प्रतिभाग के लिए किसी प्रकार का बंधन नहीं था कोई भी इसमें प्रतिभाग ले सकता था। यही कारण रहा कि हमारे विश्वविद्यालय के लगभग सभी प्राध्यापक, अधिकारी, कर्मचारियों सहित बिलासपुर के गणमान्य नागरिक, विद्यार्थी सहित अन्य राज्यों के प्रतिभागी भी शामिल हुए। इस कार्यशाला में लगभग 170 से अधिक प्रतिभागियों ने में भाग लिया। यह इस कार्यशाला की सफलता ही कही जानी चाहिए। इस कार्यशाला से समाज और देश को निम्नलिखित लाभ होंगें–

1. भारतीय ज्ञान परंपरा को जानने और उसके व्यापक प्रसार के लिए लोगों में जागरूकता फैली है।
2. भारतीय संस्कृति में मौजूद मानव–मानव को एक्य रखने के भाव, मूल्यों को जनमानस आत्सात करेंगे। इस तरह से हमारी भारतीय संस्कृति, संभ्यता और श्रेष्ठ मानवीय–मूल्य अक्षुण्य रखे जा सकेंगे।
3. जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी द्वारा पूरे भारत वर्ष को एक सूत्र में पिरोय रखने के लिए संस्कृति और भाषा को संमृद्ध किया है। ऐसे महापुरुष को लोग पुनः स्मरण कर सकेंगे और भारतीय गुरु परंपरा को पुनः स्थापित करने में हमें सहयोग प्राप्त होगा।
4. भारतीय भाषाओं के विकास में यह कार्यशाला मूल्यवान रही। इसका प्रमुख कारण है कि जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी के संदेशों को स्थानीय भाषा में बताया गया जो कि सभी के लिए ग्राह्य रहा। केरल और महाराष्ट्र राज्यों से आए विद्यार्थियों से स्वामी श्री सच्चिदानंद तीर्थ जी महराज श्री चक्र महामेरु पीठक, मुंगेली ने मलयालम में जब संवाद किया और उन्हें भी श्री शंकराचार्य जी के कार्यों से अवगत कराया तो उन विद्यार्थियों में अपनत्व का भाव आया वे शंकराचार्य जी से मिलकर भावविभोर हुए।

12. Recommendations

भारतीय ज्ञान, संस्कृति और भाषा केंद्रीत इस तरह की कार्यशालाएँ लगातार आयोजित होनी चाहिए। ऐसे विषयों पर शोध परियोजनाएँ भी आमंत्रित और स्वीकृत की जानी चाहिए। स्थानीय संयोजक के इस तरह के आयोजनों का अनुभव अन्य क्षेत्रों राष्ट्रीय मंचों पर साझा किया जाना चाहिए उन्हें आमंत्रित किया जाना चाहिए। भारतीय भाषा समिति तथा अन्य केंद्रीय समितियों को इसका प्रत्यक्ष अनुभव के लिए स्थानीय संयोजकों की विशेषज्ञता के लिए लगातार संपर्क रखा जा सकता है।

(डॉ.. जयपाल सिंह)